456वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | प्रथम अंक | अगस्त 2016

इस अंक में...

12 'वर्तमान', अतीत और भविष्य से कहीं अधिक बेहतर
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
32 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
37 नवीनतम सामान्य ज्ञान
41 खेलकूद
45 रोजगार समाचार
47 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
50 सिविल सेवा परीक्षा—रणनीतियाँ जो आपके प्रयास को सफल बना सकें
54 युवा प्रतिभाएं
63 फोकस-भारतीय बैंकिंग उद्योग के दुर्दिन : उत्तरदायी कौन
68 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
77 ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय समावेशन का महत्व एवं इसके लाभ
80 मेक इन इण्डिया में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम ऋण की भूमिका
83 13वाँ भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन
86 संवैधानिक लेख—भारतीय संविधान का विकास काल
88 सामयिक लेख—स्वच्छता सर्वेक्षण-2016
90 नाभिकीय आयुध लेख—उत्तर कोरिया के हाइड्रोजन बम का वैश्विक प्रभाव
92 द्विपक्षीय सम्बन्ध—अमरीका-क्यूबा सम्बन्धों का नया दृष्टिकोण
95 साहित्यिक लेख—वर्तमान युग में गोस्वामी तुलसीदास की प्रासंगिकता
97 सामरिक लेख—चाबहार करार के सामरिक निहितार्थ
100 अन्तरिक्ष विज्ञान लेख—मंगल ग्रह पर मिला पानी
101 नशामुक्ति लेख—नशीले पदार्थों का कसता शिकंजा
105 सामाजिक लेख—भारत कम करेगा कार्बन गैस उत्सर्जन
111 पर्यावरणीय लेख—ग्रीन हाउस प्रभाव एवं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव
114 सार संग्रह
118 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान (i) उ.प्र. सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
127 (ii) उत्तराखण्ड वन क्षेत्राधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2015
131 (iii) एस.एस.सी. जूनियर इंजीनियर (जे.ई.ई.) परीक्षा, 2016
134 (iv) आगामी आर.ए.एस./आर.टी.एस. प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
141 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
143 अंतरवैयक्तिक संचार—आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
145 ऐच्छिक विषय—(i) इतिहास—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
151 (ii) शिक्षा—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
155 मानव स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य जानकारी-स्वास्थ्य क्षेत्र में अनुसन्धान एवं विकास के बढ़ते चरण-सिंहावलोकन
158 तर्कशक्ति—(i) सिंडीकेट बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2016
164 (ii) एलआईसी ए.ए.ओ. परीक्षा, 2016
167 संख्यात्मक अभियोग्यता—रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ऑफीसर्स ग्रेड 'बी' परीक्षा, 2015
172 सामान्य हिन्दी—उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2014
175 क्या आप जानते हैं ?
176 अपना ज्ञान बढ़ाइए
177 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—भारत में अन्तर्राज्यीय जल विवाद
179 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-445 का परिणाम
180 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 174
183 वार्षिकी

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

'वर्तमान', अतीत और भविष्य से कहीं अधिक बेहतर

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

यदि आप अवसाद में हैं
तो आप अतीत में जी रहे हैं।
यदि आप उद्विग्न हैं
तो आप भविष्य में जी रहे हैं।
यदि आप शान्ति में हैं
तो आप वर्तमान में जी रहे हैं।

वर्तमान को अंग्रेजी में Present कहते हैं, क्योंकि ये वाकई में 'Present' है, एक उपहार है, जो सदा अमूल्य है व बिना मूल्य के हर क्षण सबको प्राप्त है, जो इसे जी लेता है, वह जीवन जीना जानता है, जो इसे खो देता है, वह जीवन के अनुभव से वंचित रह जाता है.

'समय' Time phase को उसके वास्तविक स्वरूप में समझें, तो वह केवल 'वर्तमान' है, प्रत्येक पल में है, क्षण रूप है, किन्तु अगर मन के प्लेटफार्म पर इसे समझें, तो यह तीन भेदों वाला है—एक अतीत दूसरा वर्तमान व तीसरा भविष्य. अतीत, जो जा चुका, भविष्य जो आया नहीं व वर्तमान जो न कहीं आता है, न कहीं जाता है, जो मात्र 'है' बस वरत रहा है, इस क्षण में है.

भूत-भविष्य का होना वास्तविक नहीं है, वह मात्र हमारी मन की यादों व कल्पनाओं में है. हम सबके मन को भूत-भविष्य में रहने की ही आदत है, यही कारण है कि मन सदा बेचैन बना रहता है. मन का सुख-चैन पूर्णतया कभी भी सम्पादित हो ही नहीं पाता है, वह तो अमन होने पर ही सम्भव है. अमन में ही शान्ति है. इस अ-मन अवस्था को अपने भीतर प्रकट करने के लिए वर्तमान में जीना आना चाहिए. वर्तमान में जीना ही, जीने की कला (Art of Living) है. आओ, हम आज सीखें वर्तमान में जीने की कला के कुछ गुर, कुछ सूत्र, जो हमें बेहतर जीने में मदद करेंगे—

वर्तमान के महत्व को जानें

वर्तमान, अतीत और भविष्य से कहीं अधिक बेहतर है. अतीत चाहे कितना भी सुनहरा क्यों न रहा हो, किन्तु जीना आज में ही सम्भव है. अतीत तो भूत है, उसमें प्राण कहाँ ? प्राण सदा वर्तमान में ही होते हैं. भविष्य की सत्ता तो है, किन्तु उसमें भी प्राण नहीं हैं. 'प्राण' मात्र और मात्र वर्तमान में ही होते हैं. इसीलिए वर्तमान सर्वश्रेष्ठ है, सर्वोपरि है, वही भूत का हिस्सा होता है, वही भविष्य की रचना करता है. अगर वर्तमान को सुधार लिया, तो भूत भी बदला व भविष्य भी सुधरा. वर्तमान का पल एक अदृश्यमान अन्तहीन शृंखला की एक छोटी-सी कड़ी है, जिसके हाथ से टूटने पर, छूटने पर सम्पूर्ण शृंखला खो जाएगी. परिवर्तन की समस्त सम्भावनाओं का आधार एकमात्र वर्तमान पल है, इसे जीने के तरीके बदल लें, तो हर तरह के मूल बनावट को बदल पाना सम्भव होगा. अगर आपको जीवन के किसी भी विषम क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुँचना है, तो इस वर्तमान पल को अपने लक्ष्य से पूरा भर दो, हर वर्तमान क्षण में अपने लक्ष्य को जीने लगो, अगर डॉक्टर बनना है, तो डॉक्टर की तरह इस पल को जीओ, हर पल जीओ—आप स्वयं को जिन भावों से वर्तित करोगे, वही आपका भविष्य होगा.